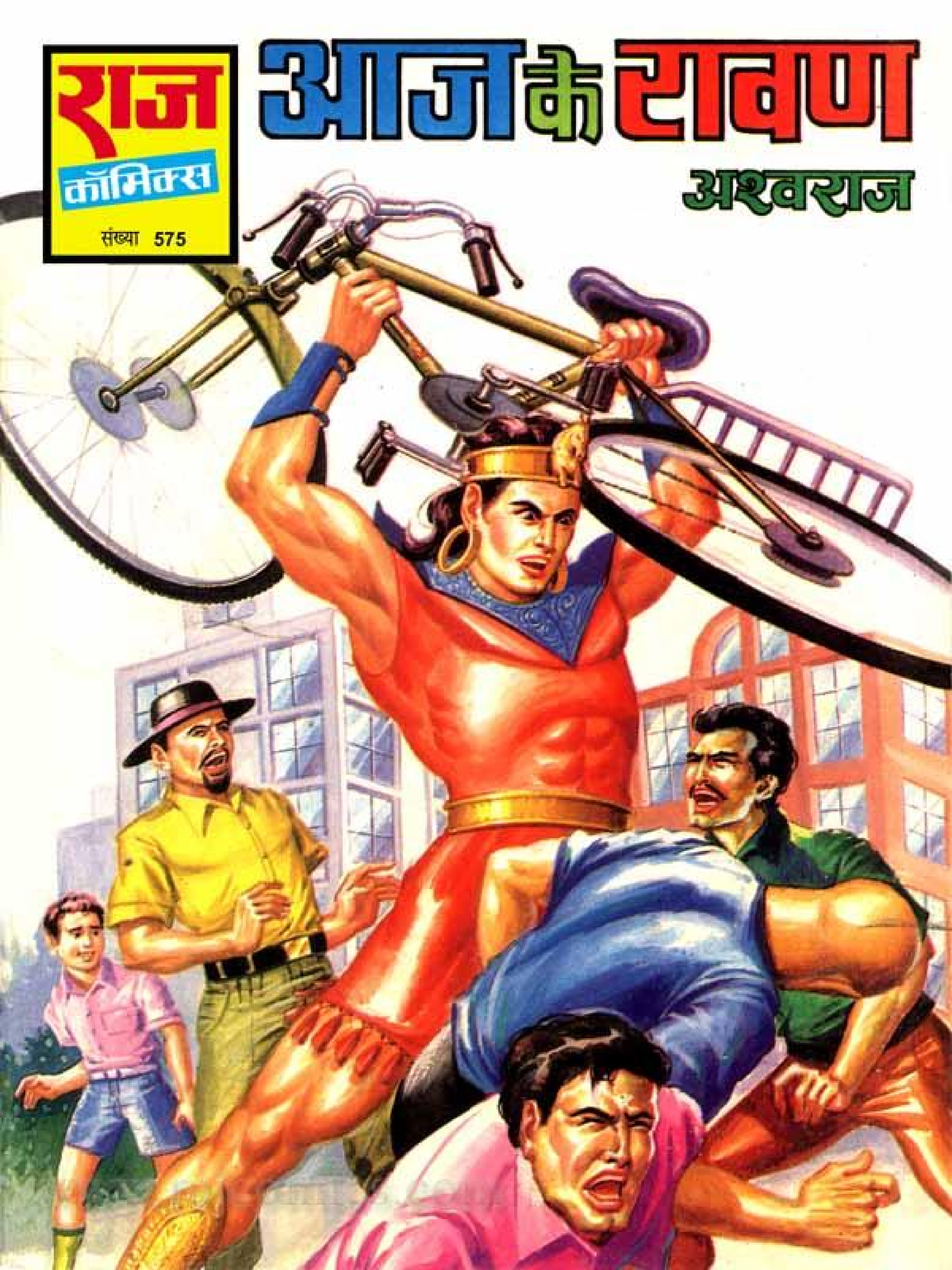
राज
कॉमिक्स
संख्या 575
आज के रावण
अश्वराज

आज के रावण
लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादक : मनीष गुप्ता
कलानिर्देशन : प्रताप मुळीक
चित्रांकन : मिलींद / कांबळे
एक शैतान अश्वबाज। जिसने सूर्यवंशी राजघराने से कारू का खज़ाना लूटकर भविष्य नामक उस तिलिस्मी घेरे में समा जाने की योजना बनाई—
हा हा हा। भविष्य नामक यही यंत्र मेरी मंज़िल है। प्रवेश कर जाओ इस सतरंगी घेरे में!
अश्वराज के रथ के विलक्षण पंचाश्व इस शैतान के सम्मोहन में बंधे उसका आदेश मानने पर विवश हो गए थे और रथ में मूर्छित हुई पड़ी थी राजकुमारी कुंदुमघुम्बी भी—
लेकिन इसके पूर्व कि सम्पूर्ण रथ के साथ अश्वबाज भी समा जाता उस घेरे में—
ठीक उसी वक्त अश्वराज ने वहां पहुंचकर उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया—
अश्वराज की ठोकर से उछलकर अश्वबाज का सिर उस सूखे कुएं में जाकर गिरा और तब अश्वराज ने सैनिकों को आदेश दिया—
बन्द कर दो इस कुएं का मुंह। अब ये शैतान सिर बाहर न आ सकेगा।

और उधर लोप होने लगा था वह घेरा–
ओह नहीं! पंचाश्व, रथ और कुदुम उस घेरे में समा चुके हैं। और अब यह घेरा सिकुड़ रहा है।
जिस वक्त पर अश्वराज कूद गया था उस घेरे में–
उफ!
और इसी के साथ गायब हो गया था वो घेरा–
कहां गया अश्वराज?
कैसा था वो तिलिस्मी घेरा?
जिसके दूसरी ओर आकर गिरा था अश्वराज–
उफ!
न जाने कहां आकर गिरा था अश्वराज–
और निगाहें उठाते ही भौचक्का हो उठा अश्वराज–
यह कहां आ गया मैं?
विशेष नोट :- प्रस्तुत सारांश पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स 'अश्वराज और अश्वबाज' का है। लेकिन प्रस्तुत कॉमिक्स के कथानक से पूर्व कॉमिक्स का उक्त सारांश के अलावा अन्य कोई सम्बन्ध नहीं है। उक्त सारांश आगे का कथानक समझने के लिए पाठकों का केवल मार्ग दर्शक है।

'अश्वराज और कलयुग' नामक कॉमिक्स को बड़े ही निराशाजनक ढंग से विपुल कुमार ने एक बार फिर देखा। और–
उफ! भविष्य नामक यंत्र से होकर कहां गया अश्वराज का रथ?
... कहां गया रथ पर लदा कारूं का खजाना?
कहां गई राजकुमारी कुवुमछुम्बी?
... और कहां गया खुद अश्वराज?
कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में खलबली मचाम्रहुए थे–
भविष्य नामक यंत्र उसे जरूर उस काल से भविष्य में ले गया होगा।
मगार भविष्य में कितना आगे?
कहीं अश्वराज, कुदुमछुम्बी, अश्वराज का रथ और कारूं का खजाना इसी कलयुग में तो मौजूद नहीं हैं?

विपुल! तुम अभी तक कॉमिक्स पढ़ रहे हो? होमवर्क कब करोगे?
अरे बाप रे! मां आ गई।
ओफ्फोह! ये लड़का तो हर वक्त कॉमिक्सों में ही उलझा रहता है। न जाने क्या होगा इस लड़के का भविष्य।
ओफ्फोह मां! तुम तो नाहक ही परेशान हो रही हो। होमवर्क तो मैं चुटकियों में निपटा लूंगा।
अरे!
अब क्या हुआ?
मेरी मैथमैटिक्स की बुक तो सुमित सेमवाल के पास रह गई। उफ!, हो गई मुसीबत।
मां! मैं अभी सुमित से बुक लेकर आता हूं। बस, गया और आया।
पता नहीं कब सुधरेगा ये लड़का।

इधर। अश्वराज के सामने था वह अजनबी शहर, जिसे आश्चर्य के साथ देख रहा था वो-
भविष्य नामक यंत्र से निकलकर कहां आ गया हूं मैं? कोई शहर मालूम पड़ता है वहां।
इसका मतलब हुआ कि पंचाश्व रथ और कुदुमफुम्बी भी यहीं पहुंचे होंगे।
मगर इस वक्त वे कहां होंगे? किस अवस्था में होंगे?
चिंतित अश्वराज यही सब सोचता हुआ आगे बढ़ रहा था-
और शहर की उस सुनसान सड़क पर-
रोक! रोक! जीप रोक, गज्जू!
अगले ही पल जीप को ठीक वहां लाकर रोका गज्जू ने-
बुढ़िया के हाथ में सोने के कंगन हैं पंगा!
और सड़क भी है सुनसान! ताक धिन!
?

गंजू! बुढ़िया के हाथ के कंगन उतार ले।
नहींऽऽ
ताकधिन!
नहीं?
ताक धिन।
आहऽऽ
गंजू की ताकत के आगे कहां टिकनी थी बुढ़िया—
एकाएक झपट पड़ी वह गंजू पर—
मेरे कंगन मुझे वापस कर दे शैतान!
ताक धिन।
गंजू के एक जोरदार घूंसे ने बुढ़िया की नाक से नकसीर छुड़वा दी—
ताक धिन
आहें...
इसी के साथ गंजू ने अपनी चांद पर बजाया तबला—
और चारों शैतान अपनी जीप पर सवार हो गए, गज्जू आ जमा ड्राइविंग सीट पर, लेकिन—
नहीं। मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।
ताक धिन।

गज्जू ने पूरी शक्ति से दबाया एक्सीलेटर, और—
ताक धिन!
हा हा हा
हा हा हा
आहऽऽ!
ताक धिन!
मर गई!
तू जीप तो आगे बढ़ा।
निर्दोष बुढ़िया की चीख से ठिठक गए वे कदम! चौंक गई वे निगाहें—
जिनके सामने था वो दृश्य—
पुनः एक्सीलेटर पर दब गया गज्जू का पांव—
लेकिन साथ ही जीप से बाहर खिंचता चला गया उसका जिस्म—
अरे, आह!
अबे गज्जू! कहां गया? मरवायेगा क्या हमें?
कूदो!
ताक धिन!

खून उतर आया था अश्वराज की आंखों में—
एक कमजोर व बूढ़ी स्त्री को इतनी नृशंसता के साथ मार डाला तुम लोगों ने?
एक ही घूंसे में पूरा जबड़ा हिला दिया।
आह! अबे कौन है बे तू?
अश्वराज!
और अब मैं तुम्हें तुम्हारे महाराज के पास ले जाऊंगा, ताकि तुम्हारे इस कुकृत्य का दण्ड तुम्हें दिलवा सकूं।
महाराज?
इसी पल तीव्र ठोकर से पीछे को उछल पड़ा अश्वराज—
ओफ्फ!
ताक धिन! वाह, पंगा!
अबे ओ जोकर! इस सड़क को क्या तूने नौटंकी का मंच समझ लिया था?
तेरी अंतड़ियां चीरकर डाल दूंगा। समझा। उफ!

इसी पल एक झटके के साथ वहां पहुंचकर रुकी वह साइकिल, और—
अरे बाप रे! सड़क पर फाइटिंग चल रही है और...
अगले ही पल लड़के की आंखों में महान् आश्चर्य उभर आया—
ये....ये तो अश्वराज है। अश्वसम्राट अश्वराज!
और उसी क्षण गज्जू के हाथ में चमकी रिवॉल्वर—
?
तेरी मौत गज्जू के रिवॉल्वर की गोली से लिखी है।
गोली चला भी दी गज्जू ने...
...लेकिन ऐन गोली के चलने के समय वह साइकिल तीव्र रफ्तार से आ टकराई गज्जू से—
धांय
आह!
बदल गई गोली की दिशा—
और अश्वराज ने भी भांप ली उस अस्त्र की भयानकता—
ओह! इस लड़के ने उसके आग्नेयास्त्र से मेरी रक्षा की है।
अश्वराज! इन शैतानों को छोड़ना मत।
विपुल के संबोधन पर बुरी तरह से चौंका अश्वराज—
अश्वराज? ये लड़का मुझे कैसे जानता है? जबकि मैं इस जगह पर बिल्कुल अनजा
हूं।
इसी के साथ म्यान से बाहर आ गई अश्वराज की तल

पंगा, गज्जू और गंजू के होंठों पर यह देखकर व्यंग-भरी खतरनाक मुस्कान तैर गये—
हा हा हा। तलवार से गोली का सामना करेगा हा हा हा!
कड़ाक
धांय धांय धांय
यह क्या? तलवार टूट गई!!
गज्जू! पहले उस छोकरे को गोली से उड़ा दे! तेरा पहला निशाना उसी के कारण चूका था।
अश्वराज!
ताक धिन!
अश्वराज ने वह टूटी हुई तलवार गज्जू के हाथ पर खींच मारी—
तलवार का यह उपयोग तो अभी भी कारगर सिद्ध होगा!
आऊऽऽ
और अब अश्वराज ने उठा ली वह साइकिल, और—
यह अजीबो-गरीब वाहन इस समय शस्त्र का काम कर सकता है।
और—
आह
धड़ाक
मर गए!
ताक धिन!

अश्वराज विपुल की ओर पलटा—
वाह अश्वराज! तुम्हें जैसा पढ़ा-सुना था ठीक वैसा ही पाया। हाथ मिलाओ दोस्त!
आऽहां!!
मुझे विपुल कुमार कहते हैं।
लेकिन तुम मुझे कैसे जानते हो?
मैंने तुम्हारा इतिहास पढ़ा है अश्वराज और बार-बार पढ़ता हूं। शायद मेरे अलावा आज तुम्हारे बारे में केवल तुम्हारे इतिहास को लिखने वाला लेखक ज्यादा जानता होगा।
मैं तो यह भी जानता हूं कि तुम भविष्य नामक यंत्र से होकर अपने रथ और राजकुमारी कुदुमछुम्छी की तलाश में यहां आए हो।
?!!
तुम तो मेरे बारे में सचमुच बहुत कुछ जानते हो। खैर फिर भी मैं तुम्हारा मुहसानमंद हूं कि तुमने ऐन समय पर मेरे प्राण बचाए।
अश्वराज! प्राण तो तुमने भी मेरे बचाए। चलो हिसाब बराबर।
तो फिर अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे नगर का राजा कौन है और उसका महल कहां है, ताकि सैनिकों को इस घटना की सूचना तुरन्त दे दी जाए।
राजा? महल! सैनिक! हा हा हा।

क्यों? क्या हुआ?
राजा — महल — सैनिक तो कब के खत्म हो गए अश्वराज! इस समय तुम बीसवीं सदी में हो...
... जहां राजा के स्थान पर राष्ट्रपति। महल की जगह राष्ट्रपति निवास और सैनिकों की जगह होती है पुलिस। हा-हा-हा।
ओह!
मैं पुलिस को इस घटना की सूचना तो दे दूंगा अश्वराज, लेकिन पुलिस यह यकीन नहीं करेगी कि यह सब तुमने किया है।
कोई बात नहीं, लेकिन ये बदमाश कानून की गिरफ्त में तो आ ही जायेंगे न।
तो फिर चलो! बैठो पीछे। हम निकटवर्ती किसी टेलीफोन से पुलिस को सूचित कर देते हैं।
टेलीफोन?
हां अश्वराज! यानी दूरसंचार यंत्र। जिससे बैठे-बिठाए शहर के किसी भी स्थान पर बातचीत की जा सकती है।
जमाना कितना बदल गया है।

कुछ समय बाद ही विपुल एक टेलीफोन बूथ में प्रवेश कर गया—
टेलीफोन! विचित्र वस्तु है।
अश्वराज! तुम यहीं ठहरना। मैं पुलिस को इनफॉर्म कर दूं।
विचित्र इंसान है। इसके कपड़े देखो!
बम्बई जाने की बजाय गलती से देवनगर आ गया है। ही ही ही!
क्या ये स्त्रियां मेरे विषय में कुछ कह रही हैं?
!
वो दोनों स्त्रियां इसमें सवार होकर यहां पहुंची थीं।
यह विचित्र-सा वाहन लगता है, मगर ये चलता कैसे है?
इसमें घोड़े कहां जुते हैं?
बिना घोड़ों के कैसे चलता है ये वाहन?

और तभी—
चोर! चोर कहीं के। बोल! क्या चुरा रहा था कार में से?
जरूर कार-स्टीरियो चुरा रहा होगा। आजकल कार-स्टीरियो चोरों का पूरा गैंग सक्रिय है।
चोर?
??
और कपड़े भी तो देखो इसके।
!
मस्तक पर ताज ऐसे टांग रखा है जैसे कहीं का शहंशाह हो।
TELEPHONE
मारो इसे!
और तभी-
ठहरो! ये चोर नहीं है। ये अश्वलोक का चक्रवर्ती अश्वसम्राट अश्वराज है। इसे इस युग के बारे में कुछ भी नहीं मालूम। ये भविष्य यंत्र द्वारा यहां पहुंचा है।
हा हा हा
हा हा हा

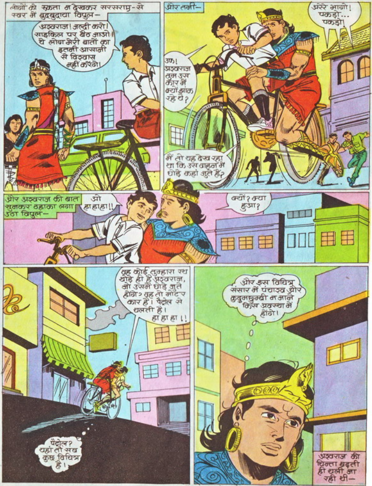
लोगों को रुकता न देखकर सरसराहट-से स्वर में बुदबुदाया विपुल—
अश्वराज! जल्दी करो! साइकिल पर बैठ जाओ। ये लोग मेरी बातों का इतनी आसानी से विश्वास नहीं करेंगे।
और तभी—
अरेरे भागो! पकड़ो... पकड़ो!
उफ! अश्वराज तुम उस कार में क्यों झांक रहे थे?
मैं तो यह देख रहा था कि उस वाहन में घोड़े कहां जुते हैं?
और अश्वराज की बात सुनकर ठहाका लगा उठा विपुल—
ओ हा हा हा!!
क्यों? क्या हुआ?
वह कोई तुम्हारा रथ थोड़े ही है अश्वराज, जो उसमें घोड़े जुते होंगे? वह तो मोटर कार है। पैट्रोल से चलती है। हा हा हा!!
पैट्रोल? यहां तो सब कुछ विचित्र है।
और इस विचित्र संसार में पंचाश्व और कुदुमछुम्बी न जाने किस अवस्था में होंगे।
अश्वराज की चिन्ता बढ़ती ही चली जा रही थी—

और अचानक बेइन्तहा उछल पड़ा अश्वराज–
HOLIDAY INN
अरे! रक्ताम्बर। कालाखोर। अश्ववट। नीलकंठ और श्रव्यशक्ति। उफ!
CARRIER
RACE COURSE CO.
?!
विपुल कुमार! उस मोटर वाहन में मेरे पंचाश्व हैं।
ओर उफ! मुझे देखकर भी अनदेखा कर दिया पंचाश्व ने!
CARRIER
RACE COURSE COMPANY
शैतान अश्वबाज का सम्मोहन उन पर से अभी तक भी नहीं टूटा लगता है।
अश्वराज! उस लॉरी का पीछा इस साइकिल द्वारा कर पाना असम्भव है।
PLAZA
RAJ CO

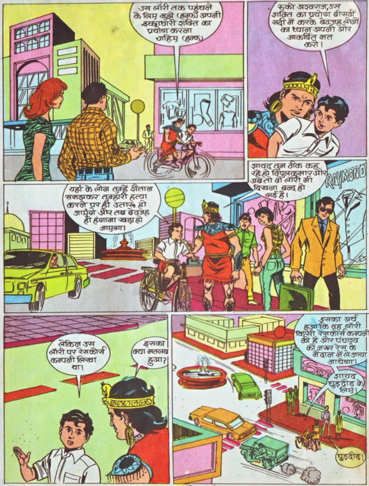
उस लॉरी तक पहुंचने के लिए मुझे (हम्फ) अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए (हम्फ)
रुको अश्वराज, उस शक्ति का प्रयोग बीसवीं सदी में करके बेवजह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित मत करो।
यहां के लोग तुम्हें शैतान समझकर तुम्हारी हत्या करने पर ही उतारू हो जाएंगे और तब बेवजह ही हंगामा खड़ा हो जाएगा।
शायद तुम ठीक कह रहे हो विपुलकुमार और अब तो वो लॉरी भी दिखना बन्द हो गई है।
RAYMOND
लेकिन उस लॉरी पर रेसकोर्स कम्पनी लिखा था।
इसका क्या मतलब हुआ?
इसका अर्थ हुआ कि वह लॉरी किसी रेसकोर्स कम्पनी की है और पंचाश्व को ज़रूर रेस के मैदान में ले जाया जायेगा।
शायद घुड़दौड़ के लिए।
घुड़दौड़!

अपनी रोमांचक दौर में थी घुड़दौड़!
Coca-Cola
चेतक ऽऽ चेतक ऽऽ
बिजली ऽऽ बिजली
PEPSI
ढूँढ़ऽऽ ढूँढ़ऽऽ
लाखों रुपये लगे हुए थे घुड़दौड़ में शामिल एक-एक घोड़े पर- जिन पर सवार उनके जॉकी उन्हें एक-दूसरे से आगे ले जाने की चेष्टा में जान लड़ाए हुए थे।

विपुल के साथ अश्वराज ने दर्शक दीर्घा में प्रवेश किया–
अश्वराज! मुझे उम्मीद है कि रक्ताम्बर इत्यादि को यहीं लाया गया है!
चेतक अप चेतक बक अप चेतकऽऽ बक अप
जब तक उनका सम्मोहन नहीं टूट जाता, वो मुझे नहीं पहचानेंगे।
चेतक की जीत पर मुक के दूस। मगर यहाँ कोई शूटिंग हो रही है क्या?
चलो अश्वराज! हम यहाँ जुआ खेलने नहीं आए।
घुड़दौड़ के सभी घोड़े तीव्र गति के साथ उनके आगे से गुजरे –
RACE
अश्वराज इस में पंचाश्व नहीं है।
न जाने कहाँ होंगे वे सब?
और जब तक पंचाश्व नहीं मिल जाते। मुझे रथ, उसमें लदे खजाने •••
•••और कुदुमकुम्बी का पता भी नहीं चल सकता।
विपुल! आओ! यहाँ से चलें।
चेतक! चेतक जीत गया।

तभी भीड़ में से बाज की तरह वह हाथ अश्वराज की ओर लपका, और—
ओह! इच्छाधारी अश्वशक्ति!
रुक जाओ!
सहसा ही मुड़ा अश्वशक्ति का लुटेरा, और—
खबरदार! मेरा पीछा मत करना।
बचो!
आह!
बड़ी फुर्ती के साथ अश्वराज ने वह ईंट उठाकर लुटेरे की ओर उछाल दी—
तुम्हारे अग्नेयास्त्रों से मैं घबराने वाला नहीं लुटेरे!
वो मारा!

कहर बरसाती लुटेरे की आंखों से छूटीं चिंगारियां और स्टेनगन से ताबड़तोड़ गोलियां—
निस्संदेह सैकड़ों गोलियां लपक पड़ी थीं विपुल और अश्वराज की ओर—
विपुल! उफ्!
और गोलियों की उस बाढ़ को रोकने के लिए अश्वराज के हाथों में चमकी ढाल—
इधर-उधर छितराती चली गई सभी गोलियां—
चीखता हुआ अश्व की भांति हवा में उछल पड़ा अश्वराज—
विपुल कुमार! लेटे रहना। हिलना नहीं।
ठाक
आह!

शैतान की दुम! अश्वराज के सामने से ही गुस्ताखी करके निकल जाना चाहता था?
सहसा ही लुटेरे ने लेटे-लेटे अश्वराज के पेट में ठोकर जड़ दी—
मेरी आंखें हीरे को पहचानने में धोखा नहीं खा सकतीं। बेशक वह मुकुट बेशकीमती है...
...लेकिन इस जोकर से दिखने वाले आदमी की शक्ति के आगे मैं फेल हो गया हूं!
अब यहां से भाग निकलने में ही भलाई है।
कहां गया वो बदमाश?
अश्वराज! यह देखो!

हवा के झोंके के समान अश्वराज भीतर दाखिल हुआ, और–
ओह! यह क्या? यह तो नीचे जाने का कोई खुफिया रास्ता है।
अश्वराज! वो जा रहा है लुटेरा।
और उस समय उसे रोकने का अश्वराज को जो तरीका सूझा, वह आपके भी सामने है–
क्यों विपुल कुमार? कैसी रही?
अरे!
वाह! अश्वराज
अश्वराज के हाथों के हल्के-से संकेत पर लुटेरा अस्तबल में खड़े घोड़े से आ टकराया–
उफ!
उत्तेजित हो उठा घोड़ा भी–
और–
आह..
ये तो गया!
हां। और अब हमें भी चलना चाहिए...
अश्वराज ने अश्वशक्ति को पुनः मस्तक पर सुशोभित किया–
...देखना तो होगा ही कि यह खुफिया रास्ता यहां क्यों बनाया गया है?
अश्वराज। मुझे तो यहां कुछ गड़बड़ लगती है। मैं पुलिस को भी इनफॉर्म कर देता हूं।

उसी समय भीतर–
सफलता!
मेरा प्रयोग सफल हो गया।
मि. रोमी! मि. रोमी! प्रयोग सफल हो गया।
हिनन
?
मैंने घोड़ों के रक्त से ऐसा "स्टेरायड" तैयार करने में सफलता प्राप्त कर ली है जिन्हें अगर कमजोर घोड़ों में इंजेक्ट कर दिया जाए तो वे बलवान से बलवान घोड़े को भी रेस के मैदान में पछाड़ सकते हैं।

मिस्टर रोमी। इस प्रकार आपके करीब तीन सौ बेकार हो गए घोड़ों को एक बार फिर रेस के मैदान में उतारा जा सकता है।
गुड!
डोन्टवरी डॉक्टर मैगासे!
लेकिन मुझे दुःख है मिस्टर रोमी कि इस प्रयोग के कारण कई घोड़ों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।
आपके कारण मेरे तीन सौ घोड़ों को जीवनदान मिलेगा, जिनकी रेस से मैं करोड़ो रुपये कमाऊंगा। हा हा हा!
आइये डॉक्टर मैगासे! मैं आपको एक और आश्चर्यजनक चीज़ दिखाऊं!
अश्वराज के जेहन में भूकम्प पैदा कर रही थीं डॉक्टर मैगासे की बातें—
रोमी के साथ डॉक्टर मैगासे ने एक अन्य प्रयोगशाला में प्रवेश किया—
कहिए डॉक्टर अतुल! क्या रिपोर्ट है?
ओह, रोमी साहब! मैं आपका ही इंतजार कर रहा था।

ये पांचों घोड़े अदभुत हैं रोमी साहब! रेस के मैदान का तूफान साबित हो सकते हैं ये पांचों। उफ! इन घोड़ों के रक्त-नमूने, एक्स-रेज तथा इनकी हॉर्स-पावर की जांच की रिपोटर्स अत्यंत आश्चर्यजनक हैं। मगर...
मगर क्या डॉक्टर अतुल?
ये घोड़े तो वाकई अद्भुत व विलक्षण दिखते हैं।

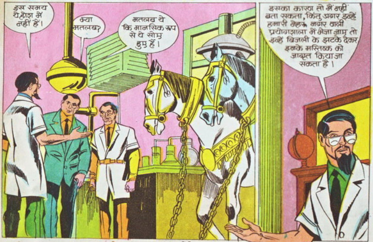
इस समय ये होश में नहीं हैं।
क्या मतलब?
मतलब ये कि मानसिक रूप से ये सोए हुए हैं।
इसका कारण तो मैं नहीं बता सकता, किंतु अगर इन्हें हमारी नेहरू नगर वाली प्रयोगशाला में भेजा जाए तो इन्हें बिजली के झटके देकर इनके मस्तिष्क को जाग्रत किया जा सकता है।

और तब अगले सप्ताह नेहरू नगर में ही आयोजित करोड़ों डॉलर की अन्तर्राष्ट्रीय घुड़दौड़ प्रतियोगिता में भी इन्हें शामिल किया जा सकता है।
तभी गूंज उठा वह धारदार स्वर—
सब कुछ सुन लिया है मैंने शैतानो!
कौन हो तुम?
अश्वराज! जिसके रथ के घोड़े तुम्हारे सामने मौजूद हैं। मैं इन्हें ही यहां से ले जाने के लिए आया हूं।
...और इसे भी संभालो। ये तुम्हारा ही आदमी लगता है।
ये तो अच्छी है। मेरा बॉडी गार्ड। जिसे मैं बाहर ही छोड़कर आया था। उफ!
अश्वराज! यहां तुम्हारी लाश का भी पता नहीं चलेगा।
ओह! किंतु पंचाश्व के बिना तो मैं यहां से नहीं जाने वाला।

रोमी ने अश्वराज पर तुरन्त गोली चला दी–
ये लाठी कब काम आयेगी।
धांय
उस गोली को अश्वराज ने तुरन्त उस मजबूत लाठी पर झेला–
अश्वराज ने लाठी को रोमी पर उछाल फेंका–
लाठी तेरा हाथ तोड़ देगी।
तड़ाक
खुद भी वह हवा में उछला और–
धाड़
धाड़
रक्ताम्बर। कालाखोर। अश्ववट। श्रज्यशक्ति। नीलकंठ। घबराना नहीं। मैं आ गया हूं।
डॉक्टर अतुल की वो हरकत अश्वराज की तीक्ष्ण निगाहों में आने से न बच सकी–
निसन्देह ये आग्नेयास्त्र जिन्दगी के लिए खतरा है, लेकिन तब, जब इसकी अग्नि शिकार तक पहुंच सके।
खनाक
धांय

और तभी कक्ष गूंज उठा खतरे के सायरन से–
मेरे किसी आदमी ने खतरे का सायरन बजाया है। लगता है पुलिस को इस प्रयोगशाला का पता चल गया है।
और अगर पुलिस यहाँ पहुंच गई तो स्टेरायड की कलई खुलते ही करोड़ों डॉलर की घुड़दौड़ प्रतियोगिता में मेरे घोड़ों की दौड़ पर प्रतिबन्ध लग जायेगा। उफ!
क्रोध से जबड़े भिंच गए थे शेमी के और अगले ही पल–
खनाक
आहं!
चकराता चला गया अश्वराज का मस्तिष्क–
और शेमी झपट पड़ा पंचाश्व की ओर–
जल्दी करो, निकलो यहाँ से।
मैं अपना फार्मूला और कुछ जरूरी चीजें साथ ले लूं।
इस प्रयोगशाला को आग के हवाले करना होगा।
ताकि इस प्रयोगशाला के साथ ही खत्म हो जाए अश्वराज भी। हा हा हा!
पांच नम्बर अस्तबल से ढेरों धुआं बाहर आसमान को छूने लगा, और–
सर! लगता है नीचे आग लग गई है।
लेकिन अश्वराज! वो अभी अन्दर ही होगा। उफ!

अरे ठहरो!
अश्वराज!
और-
अश्वराज! अश्वराज! कहाँ हो तुम? उफ! (खों खों)
अश्वराज!
आह!
तुम ठीक तो हो न अश्वराज?
हाँ! लेकिन... ओह लगता है वे लोग पंचाश्व को यहाँ से ले जाने में सफल हो गए हैं।
जल्दी करो अश्वराज! यहाँ से बाहर निकलो आग तेजी के साथ फैल रही है।
क्या अश्वराज व विपुल उस भयंकर आग से बच सके? जानने के लिए पढ़ें 'अश्वराज और अश्वकट'!